SHODH SANKALP

# SHODH SANKALP SAMIKSHA

(An International, Peer- reviewed, Refereed Journal)

(ISSN 2583-2239)

## Certificate of publication for the article titled

" उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में संघर्षशील नारी का स्वरुप "

## Authored by

KUMARI NITU

## Published in

Year 2023, Volume 3, Issue 4

Dr B Kesari
Editor- in -Chief

www.shodhsankalp.in

# उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में संघर्षशील नारी का स्वरूप

[1]कुमारी नीतु

**शोध सार**

नारी समाज का केंद्र बिंदु है। नारी के सामाजिक मूल्यों की परख समाज और साहित्य के पल-पल परिवर्तित परिवेश से ही हो सकती है पूर्व प्रेमचंद युग की नारी विलास और श्रृंगार की गुड़िया मात्र थी। उसके हाथों में अपने जीवन की बागडोर नहीं थी, वह पुरुषों के हाथ की कठपुतली थी। प्रेमचंद युग के उपन्यास की नारी शिक्षित और जागरूक है, जिसे अधिकार और कर्तव्यों का ज्ञान है। प्रेमचंद का नारी विमर्श केवल नारी उत्पीड़न और संघर्ष की गाथा नहीं है, वरन वह पितृसत्तात्मक समाज , धर्म, न्याय के समस्त मुखौटे की पहचान कराने वाला है । प्रेमचंदोत्तर युग की नारी अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक हुई है और उसने अनेक स्त्रीवाद संगठन बनाए हैं। नारी ने हर क्षेत्र में संघर्ष किया है और पुरुषों के समकक्ष पदासीन है, इसके विपरीत अशिक्षित नारी आज भी परंपराओं और मान्यताओं में जकड़ी हुई है।

**मूल शब्द :** नारी समाज **,** संघर्ष, उषा प्रियंवदा , नारीवादी आंदोलन ।

---

**लेखक**

**शोधार्थी हिंदी-विभाग**, **बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय धनबाद Email - kumarinitu2799@gmail.com.**

**प्रस्तावना**

उषा प्रियंवदा नारीवादी आंदोलन से जुड़ी हुई लेखिका है। उन्होंने पुरुष सत्तात्मक समाज-व्यवस्था में नारी को साहस,विद्रोह एवं अस्तित्वबोध से परिचित कराने का कार्य अपने साहित्य के माध्यम से भली-भाँति किया है। उनके उपन्यासों में नारी के कई रूप चित्रित हुए हैं कुछ परंपरागत नारी कुछ पढ़ी लिखी तो कुछ कामकाजी। सभी नारियाँ अपने अस्तित्व व व्यक्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत है। जीवन की नवीन परिस्थितियों के साथ समझौता न कर पाने के कारण आज स्त्री और पुरुष दोनों किस प्रकार असंबद्धता अजनबीपन एवं जीवन की विसंगतियों का अनुभव कर रहे हैं और तनाव झेल रहे हैं इसका यथार्थ चित्रण उषा जी ने किया है। उन्होंने आज के जटिल सामाजिक परिवेश में संघर्ष में उल्झी नारी की विभिन्न मन: स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने पारंपरिक और आधुनिक जीवन मूल्यों के बीच लटकती नारी

की मानसिक छटपटाहट, पीड़ा और वेदना को गहरी अनुभूति के साथ अभिव्यक्त किया है। लेखिका ने सामाजिक , पारिवारिक, आर्थिक और अकेलेपन की समस्याओं से आहात नारी की धुँधले स्वरूप को बड़ी सहजता और पैनी दृष्टि से प्रस्तुत किया है। नारी मन की घुटन, टुटन और आक्रोश को भली-भाँति अपने उपन्यासों में उकेरा है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में आधुनिक परिवेश में उदित नारी का चित्रण किया गया है। स्वतंत्रता के बाद नारी जीवन में आए बदलाव को अत्यंत सुक्ष्मता के साथ व्यक्त किया है कि नारियाँ किस प्रकार पुराने मूल्यों को नकारती तथा नए मूल्यों को अपनाती है। जिसके कारण वह अनेक प्रकार के संघर्षों से जुड़ती है। पारिवारिक संघर्ष , आर्थिक संघर्ष , नारियों के साथ अभद्र व्यवहार का संघर्ष , कामकाजी महिलाओं का संघर्ष आदि।

उषा जी के प्रथम उपन्यास की नायिका सुषमा आधुनिक नारी के आत्मसंघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। सुषमा के माध्यम से लेखिका ने आधुनिक भारतीय नारी की ऊब , छटपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की स्थिति में नारी की सामाजिक-आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। वह एक सुंदर , शिक्षित व आत्मनिर्भर नारी है। निम्न मध्यवर्गीय परिवेशों की आर्थिक जकड़न में छोटी-सी स्वतंत्रता की आकांक्षा तथा अपने पृथक अस्तित्व निर्माण हेतु वह छटपटाती रहती है। उसके ऊपर अपने माता-पिता , छोटे भाई-बहन की जिम्मेदारी है। उनकी इच्छाओं की पूर्ति करते-करते तथा सामाजिक दायित्वों का पालन करते हुए वह कब बूढ़ी हो जाती है उसे खुद पता नहीं चलता है। वह तो बस अपने परिवार के लोगों की भरण-पोषण करने की एक मशीन बन कर रह गई है। वह इन रिश्तों को निभाते-निभाते इतना ऊब जाती है कि सारे रिश्ते उसे काटने को दौड़ते हैं। सुषमा जीवन से निराश होकर कहती है- " यह कॉलेज ये खंभे मेरी डेस्टिनी है मुझे यही छोड़ दो।" 1 अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए उसे अपनी इच्छाओं का गला घोटना पड़ता है। वह अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए अपने स्वतंत्र अस्तित्व को भी भूल जाती है।

सुषमा के जीवन में जब एक नील नामक व्यक्ति का प्रवेश होता है तो वह अपने एकाकी जीवन में उसके प्रेम की स्निग्धता और आत्मीयता पाकर रोमांचित हो उठती है। वह अपने प्रेमी नील की मजबूत बाँहों के घेरे में अपने सारे दुख-दर्द भूल जाती है, क्योंकि नील एक कवच के समान उसे समस्त समस्याओं से व कठिनाइयों से बचाए रखता है। वह अपने ऐसे साथी को यह कहकर अपने जीवन से निष्कासित करने को विवश हो जाती है कि " मेरी बहुत जिम्मेदारियां है। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहने और भाई सब मुझे करना है।"2 इस प्रकार वह अपने परिवार के लिए

अपने प्रेम भावना का दमन कर देती है। परिवार के बोझ से दबी हुई सुषमा के लिए सभी का एक ही उपदेश है कि तुम एक समझदार लड़की हो,भावुकता तुम्हें शोभा नहीं देती। उत्तरदायित्व की विवशता, पद की गरिमा , समझदार स्त्री बने रहने की विवशता, सुषमा से उसके स्त्री होने के सहज अधिकार छीन लेती है, उसे बंदिनी बना देती है।

इस प्रकार सुषमा अपनी पारिवारिक प्रतिबद्धता में अपनी वैयक्तिक भावना और प्रेम की भले ही बलि चढ़ा देती हो, परंतु वो खुश नहीं है। वह जीना चाहती है पर जी नहीं सकती यह उसकी विवशता है। इसीलिए तो वह अपनी सहेली मीनाक्षी से कहती है - "पैंतालीस साल की आयु में भी एक कुत्ता या बिल्ली पाल लूँगी... उसे सीने से लगा रखूँगी.. आज से सोलह साल बाद शायद तुम अपनी बेटी को लेकर इसी कॉलेज में आओ , तब भी तुम मुझे यहीं पाओगी। कॉलेज के पचपन खंभों की तरह स्थिर , अचल।" 3 उसकी नियति ही मानो वह पचपन खंभों वाली कॉलेज है। जीवन में सब कुछ बदल जाएगा,पर नहीं बदलेगी केवल सुषमा, वह कॉलेज की उस बिल्डिंग की तरह ही स्थिर और अचल रहेगी। सुषमा के इस निराशा का चित्रण इन शब्दों में हुआ है -" जीवन की भागदौड़ और आजीविका के प्रश्नों में चुपचाप विलीन हो गए दो वर्ष और अब तो उसके चारों और दीवारें खींच गई थी, दायित्व की कुंठाओं की, अपने पद की गरिमा और परिवार की।... कभी-कभी उसका मन न जाने क्यों डूबने लगता। अपने परिवार का सारा बोझ अपने ऊपर लिए सुषमा काँपने लगती है।" 4 सुषमा अपने जीवन में पीड़ा , घुटन एवं संत्रास की अँधेरी सुरंग से गुजरती है वह आजीवन अविवाहित रहने के लिए अभिशप्त हैं। धीरे-धीरे उसके भीतर की सरसता और कोमलता सूखने लगती है और उसके स्थान पर कटुता, कर्कशता और कठोरता भरने लगती है । उसके जीवन में जो घुटन ,पीड़ा ,संत्रास और अकेलेपन की यातना है वह उसी से संघर्ष करती हुई जीने को विवश है।

उषा जी ने 'रुकोगी नहीं राधिका' अपने इस चर्चित उपन्यास में आज की नारी की मान्यताओं परिस्थितियों और विश्वासों में क्या परिवर्तन हुए उसे अपनी लेखनी का आधार बनाया है। इस उपन्यास की नायिका राधिका ने बचपन में ही मां की मृत्यु के बाद अठारह साल से अकेलेपन की यातना, को जाना है, कि वह कितना पीड़ादायक वह भयावह होता है। यही कारण है कि पिता के प्रति उसका गहरा लगाव हो जाता है किंतु अधेड़ उम्र में उसके पिता जब उसके ही उम्र की एक लड़की विद्या के साथ विवाह कर लेते हैं तो उसे काफी दुख होता है और पिता-पुत्री के संबंध में बिखराव उत्पन्न हो जाता है। अपने पिता से लड़-झगड़कर वह विदेश चली जाती है और वहाँ वह एक पत्रकार डेनियल पीटरसेन की प्रोटेक्शन में रहती है, किंतु दोनों भावनात्मक रूप से जुड़ नहीं पाते। डैन के साथ अपने संबंध

को अच्छे से निभा नहीं पाती है,रिश्ते में तनाव उत्पन्न होने लगता है तब वह मिसेज होमर के घर रहती है। वहाँ वह अपने अकेलेपन की भयावहता के संदर्भ में अपने पिता के अठारह वर्षों के अकेलेपन के दंश का अनुभव करती है। उसे लगता है पिता से संपूर्ण एकाग्रता की कामना करके उसने भूल की थी। 'राधिका' अपने आप को पाश्चात्य परिवेश से नहीं जोड़ पाती है और तीन वर्ष बाद वह अपने देश लौटने का निर्णय लेती है लेकिन वह यहाँ भी अपने को मिसफिट और अजनबी पाती है।

राधिका जब भारत वापस आती है, तो वह भावनात्मक, परिवेशगत तथा निजी संबंधों में भी अलगाव महसूस करती है। उसे लगता है कि यहाँ कोई उसकी भावनाओं को समझना नहीं चाहता है, सभी उससे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। इसीलिए वह स्वयं को हमेशा अकेले ही पाती है- " मेरा परिवार, मेरा परिवेश, मेरे जीवन की अर्थहीनता और मैं स्वयं जो होती जा रही हूँ। एक भावनाहीन पुतली- सी।"5 राधिका ने सोचा था कि भारत लौटने पर उसके अंदर का अजनबीपन का जमा 'हिमखण्ड' शायद पिघल जाएगा। उसकी बेचैनी,ऊब,अकुलाहट सब समाप्त हो जाएगी वह शांति महसूस करेगी, पर ऐसा कुछ भी नहीं होता है। उसके भीतर का अजनबीपन और बढ़ता ही जाता है। अंततः वह मनीष के साथ रहने का निर्णय लेती है, जो प्रगतिशील विचारों का था तथा उसने पाश्चात्य संस्कृति को काफी करीब से देखा था। मनीष अंत में भारत में बसने का निश्चय करता है क्योंकि वह राधिका के दर्द को समझता है। राधिका इसी विश्वास के साथ, पिता के अकेलेपन और आग्रह को फटकारते हुए ,कशमकश को कुचलकर अपने इर्द-गिर्द जमे अकेलेपन एवं अजनबीपन के भयावह अँधेरे को तोड़कर बाहर निकल आती है क्योंकि मनीष उसका इंतजार कर रहा है। वह सुषमा के समान न अकेलेपन तथा अजनबीपन का शिकार बनती है और न ही टूटती है। लेखिका ने राधिका के माध्यम से समाज के आधुनिक नारियों की घुटन,पीड़ा और बाधाओं को बड़ी बारीकी से सामने रखा है जो हर कीमत पर नारी की स्वाभिमान और समानता को बनाए रखने के लिए संघर्षरत है। वह किसी के सामने झुकती नहीं है और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सदैव संघर्षरत रहती है।

'शेष यात्रा' उपन्यास में लेखिका ने नारी चेतना को एक नया आयाम प्रदान किया है। इस उपन्यास में नारी की पीड़ा, घुटन एवं त्रासद स्थितियों का सफल चित्रण किया गया है। शेष यात्रा की नायिका अनु प्रणव द्वारा संबंध विच्छेद होने पर एक बेबुनियाद महल की तरह ढह जाती है। तलाक से पहले उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहता है - "यह बात मुझे हर वक्त कचोटती थी कि मैं व्यक्ति की हैसियत से कुछ भी नहीं रही,जो कुछ थी, वह सब श्रीमती कुमार की हैसियत से।"6 अनु का टूटना तो ऐसी स्थिति में स्वाभाविक था। उसकी सहेली दिव्या अन्याय सहन नहीं कर सकती क्योंकि वह प्रगतिशील विचारों की हैं। वह भी एक सुसंस्कृत पत्नी बनना चाहती है लेकिन अगर उसका पति उसके अस्तित्व को

ठेस पहुँचाता है तो वह चुपचाप सहती नहीं है उसका विरोध करती है। वह अनु से कहती है कि यदि मेरा पति जयंत मेरे साथ ऐसा व्यवहार करता तो - "मैं कहूँगी, जाओ जयंत, ईफ़ आम नॉट गुड एनफ फ़ॉर यू ,यू आर नॉट गुड एनफ फ़ॉर मी।और फिर मैं जयंत को दिखा दूँगी कि मैं भी कुछ हूँ, कि मैं उन पर निर्भर नहीं हूँ। मैं अपनी जिंदगी से हर मायने में जयंत को निकाल फेंकूँगी।"7

अनु को अन्याय का सामना करने की शक्ति दिव्या से मिलती है । वह अनु को नए सिरे से जीवन की शुरुआत करने के लिए प्रोत्साहित करती है। अनु, दिव्या के विचारों से प्रभावित होकर अपने पति से तलाक ले लेती है और वह बाद में डॉक्टर बन जाती है। जो स्त्री पुरुष के आश्रय में रहकर अपने अस्तित्व को भूल गई थी, अब वह अनु अपने जीवन में पुरुष के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा देती है- " स्थाई रूप से पुरुष जीवन में न हो तो ना हो। जरूरत भी किसे है।" 8 फिर भी उसका आकर्षण दीपांकर के साथ विवाह में परिणित हो जाता है। प्रणव जब अनु से मिलता है तो वह उसे बदली हुई जान पड़ती है। यह देखकर वह आश्चर्यचकित हो जाता है - "कहाँ गई वह भोली-भाली, मीठी-मीठी लड़की, गुड़िया जैसा जगमगाता चेहरा। अब पहली नजर में वह रूप आँखों में नहीं टकराता। दीखती है एक आत्मविश्वासी, संतुलित, लापरवाह-सी सादगी से भरपूर एक पूर्ण युवती।"9 इस प्रकार अनु पति से अलग होकर कमजोर नहीं बनती बल्कि अपने स्वतंत्रता और अस्तित्व की रक्षा करते हुए डॉक्टर बनकर स्वच्छंद जीवन व्यतीत करती है।

इस उपन्यास की नायिका अनु एक संघर्षशील नारी के रूप में उभरकर सामने आती है। जो कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानती अपनी जिजीविषा बरकरार रखती है। दिव्या द्वारा प्रोत्साहित किए जाने पर वह डॉक्टर बनकर धोखेबाज प्रणव की याद में हाय-हाय करने की अपेक्षा सम्मान के साथ स्वतंत्र जीवन जीना स्वीकार करती है। अनु के माध्यम से लेखिका ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि स्त्रियाँ भी पुरुष के समान सब कुछ हासिल कर सकती है। पुरुष जो कर सकते हैं वह स्त्रियां भी कर सकती है। इसलिए जब वह पति द्वारा त्याग की जाती है तब भी हार नहीं मानती। इस प्रकार लेखिका ने स्त्री के संघर्ष को शेष यात्रा की नायिका अनु के माध्यम से दिखाया है।

'अंतर्वशी' उपन्यास में नारी के जीवन शैली में आए बदलाव को दिखाया गया है। अंतर्वशी की नायिका 'वाना' सहज एवं स्वाभाविक इच्छाओं के साथ संपन्न जीवन जीने और सभी सुखों का आनंद उठाने के लिए लालायित रहती है और हर संभव प्रयास भी करती है। 'वाना' को पति और बच्चों के बीच अपना अस्तित्व नगण्य लगता है। उसके जीवन का यह अभाव उसे खलने लगता है। कई सवाल उसके भीतर उमड़ने लगते हैं- " कौन हूँ मैं? क्या पत्नी, माँ के परे भी कोई पहचान होती

है?"10 उसे लगता है कि क्या "घर-कपड़ों की धुलाई झाड़ू ,बिस्तर लगाना, दाल - चावल। यही है चुनमुन पांडे। वनश्री मिशिर की पहचान। उसका अस्तित्व।"11

सारिका ही 'वाना' को यह एहसास दिलाती है कि रसोई के आगे भी एक संसार है, इन सबसे बाहर निकलो आत्मनिर्भर बनो। सारिका के प्रगतिशील विचारों का प्रभाव 'वाना' के जीवन में पड़ते ही उसके जीवन में नई स्फूर्ति पैदा कर देती है। वह 'वाना' को आगे पढ़ने के लिए प्रेरित करती है और आत्मनिर्भर बनने के लिए भी प्रेरित करती है। सारिका के समझाने के बाद से ही वह गर्भनिरोधक गोलियाँ लेनी शुरू करती है और अपने व्यक्तित्व को नया रूप देने का भरसक प्रयास करती है। 'वाना' पर सारिका की बातें मानो गर्म लोहे पर हथौड़े का काम करती है। सारिका के कहने पर वह अंग्रेजी पढ़ना और बोलना सीखती है। वह अनेक प्रकार की यातनओं को झेलती हुई जीने को विवश है इसीलिए वह छोटा-मोटा अनेक प्रकार का काम भी करती है। अपनी इच्छाओं और जरूरतों को पूरा करने के लिए आगे पढ़ती है, ड्राइविंग सीखती है, सेक्रेटरी का काम करती है तथा एजेंसी में भी काम करती है। उसका पति शिवेश जब कोकीन की तस्करी में फँस जाता है तो वह स्वयं परिवार की जिम्मेदारी भी उठाती है। अंत में उसमें इतनी हिम्मत आ जाती है कि वह अपने पति से कह देती है, 'आई अम लीविंग यू'12 वह दो बच्चों की माँ होने के बावजूद भी शिवेश को छोड़कर राहुल को जीवन साथी बना लेती है। इस उपन्यास की एक अन्य पात्र अंजी भी आधुनिक नारी का परिवर्तित रूप पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करती है। वह भी पति के द्वारा छोड़ दिए जाने पर हिम्मत नहीं हारती है। अकेले ही सिलाई -कढ़ाई का काम करती है और अपने परिवार का भरण-पोषण करती है।'वाना'और 'अंजी' के माध्यम से लेखिका ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि जो सोचती है कि वह गृहणी से अधिक कुछ और नहीं बन सकती उनलोगों के लिए 'वाना' और 'अंजी' एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस प्रकार नारी मन की आधुनिक जिजीविषा, सुक्ष्म मनोविकारों और उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यासों में चित्रित करके आधुनिक नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है।

'भया कबीर उदास' की नायिका 'लिली' अपने परिवारिक संस्कारों के कारण स्वभाविक रुप में किसी से रिश्ता नहीं बना पाती। वह अकेले ही जीवन यापन करने को विवश है। इस उपन्यास में लेखिका ने 'लिली पांडे' उर्फ 'यमन' के माध्यम से नारी की छटपटाहट और मृत्यु से उत्पन्न भय का ही मार्मिक अंकन किया है। विदेश की भूमि पर रहने वाली इस आधुनिक स्त्री के जीवन में एक भयावह त्रासदी घटित होती है।उसे कैंसर हो जाता है। यह बीमारी उसके शरीर के सबसे प्रिय अंग को छीन लेता है। इस दुख को झेलते हुए उसे ऐसा लगने लगता है कि वह जीती जागती पीड़ा से भरी एक

कमजोर स्त्री है। ऐसे में जीवन से दुखी 'लिली' के लिए रात काटना भी दूभर हो जाता है। सारी रात करवटें बदलते रहने के बाद सुबह वह थकी हुई महसूस करती है। उसे समझ में नहीं आता है कि वह इस दुख से कैसे उबरे। वह आत्महत्या करने तक का भी सोचती है फिर हिम्मत न हारते हुए अपनी बीमारी से और विकट परिस्थितियों से संघर्ष करती है, किंतु हर क्षण, हर समय वह स्वयं को अन्य लोगों से पृथक समझती है। शरीर की अपूर्णता उसके जीवन की अपूर्णता बन जाती है। वह इस दुख और घुटन से उबर नहीं पाती है जितना वह इस दुख से उबरना चाहती है उतना ही वह उस में गिरती जाती है ।

वह विदेश इतिहास विषय में पी-एच०डी० करने के लिए जाती है। उसका सपना था कि वह विदेश से पी-एच०डी० करके नामी इतिहासज्ञ बनकर अपने पिता के विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर बनना, किंतु तीन वर्ष तक वहाँ रहने के बावजूद वह अपनी पी-एच०डी० की थीसिस पूरी नहीं कर पाती है। अमेरिकन विश्वविद्यालयों की राजनीति के कारण उसकी पी-एच०डी० अधूरी रह जाती है और उसका सपना भी टूट जाता है। उसी समय उसे पता चलता है कि उसे कैंसर जैसी भयंकर बीमारी भी है और वह ऐसी स्थिति में भारत वापस नहीं जाना चाहती थी- " जिस ठसक से वह भारतीय रिसर्च को तिलांजलि देकर विदेश चली आई थी, किस मुँह से वापस जाएगी और फिर जब एकाएक पापा के देहांत की खबर मिली, तब तो बची-खुची दिलचस्पी भी समाप्त हो गई।"13 इस प्रकार विदेश में उसका संघर्ष कैंसर के कारण दोहरा हो जाता है। विदेश में उसने भले ही संघर्षमय त्रासद जीवन व्यतीत किया हो किंतु "विदेश में रहकर उसने एक बात गंभीरता से ग्रहण की, है आत्मनिर्भरता अपने दुर्भाग्य या नाकामयाबी पर किसी और को दोष न देना।"14 इस भयंकर बीमारी में वह अपना प्रिय अंग खो देती है जिसके कारण वह स्वयं अपने आप से अलग और समाज से भी अलग महसूस करने लगती है - "उसे महसूस होता है कि वह जिस स्थान पर खड़ी है वह बाकी संसार से कटकर अलग हो गया है, बीच में एक दुर्गम खाई बढ़ती ही जा रही है। संसार के नॉर्मल लोग 'अन्य' हो चले हैं, चैन से सोते हैं उन्हें कल का डर नहीं। पहले कभी इतना अकेलापन नहीं लगा।"15 इस प्रकार व अकेले ही जीवन यापन करती है और अकेले ही अपनी दु:खद स्थितियों से जूझती है। फिर उसके जीवन में वनमाली आता है तो वह उसके जीवन में व्याप्त घुटन, संत्रास, उदासी आदि को दूर कर उसके जीवन में पुनः सुख का संचार कर देता है।

**निष्कर्ष**

इस प्रकार लेखिका ने नायिका के संघर्ष को दिखाया है । भारत लौटने पर भी सब कुछ जाना पहचाना होने के बावजूद उसे अजनबीपन भास होता है। इस प्रकार उषा प्रियंवदा ने परिवर्तित युग चेतना और बदलते जीवन मूल्यों के कारण व्यक्ति में उत्पन्न अजनबीपन और अकेलेपन की भावनाओं का यथार्थ

चित्रण अपने उपन्यास में किया है।लेखिका ने आधुनिक परिवेश की उपज घुटन, संत्रास, निराशा आदि का सजीव चित्रण किया है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची -**

1.प्रियंवदा, उषा, पचपन खंभे लाल दीवारें, राजकमल प्रकाशन 2013, पृष्ठ संख्या 104

2.वही, पृष्ठ संख्या 104

3. प्रियंवदा, उषा, पचपन खंभे लाल दीवारें, पृष्ठ संख्या 100

4. प्रियंवदा, उषा, पचपन खंभे लाल दीवारें, पृष्ठ संख्या 20

5. प्रियंवदा, उषा, रुकोगी नहीं राधिका, पृष्ठ संख्या 85

6.प्रियंवदा, उषा, शेषयात्रा, पृष्ठ संख्या 107

7.वही, पृष्ठ संख्या 73

8.वही, पृष्ठ संख्या 117

9.वही, पृष्ठ संख्या 104

10. प्रियंवदा, उषा, अंतर्वशी, पृष्ठ संख्या 143

11. वही, पृष्ठ संख्या 144

12. वही, पृष्ठ संख्या 241

13. प्रियंवदा, उषा, भया कबीर उदास, पृष्ठ संख्या 71

14. वही, पृष्ठ संख्या 90

15. वही, पृष्ठ संख्या 69

16. प्रियंवदा, उषा, नदी, पृष्ठ संख्या 44